हिंदी और देवनागरी लिपि

(प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख गौरव ग्रंथ)

अध्यक्ष
प्राचार्य डॉ. भास्कर झावरे

प्रधान संपादक
डॉ. हनुमंत जगताप

संपादक
डॉ. अशोक गायकवाड

हिंदी और देवनागरी लिपि

(प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख गौरव ग्रंथ)

अध्यक्ष, संपादक मंडल

प्राचार्य डॉ. भास्कर झावरे

न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एण्ड साइंस कॉलेज,

अहमदनगर (महाराष्ट्र)

प्रधान संपादक

डॉ. हनुमंत जगताप

(सदस्य, हिंदी अध्ययन मंडल, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय)

अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र,

न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एण्ड साइंस कॉलेज,

अहमदनगर (महाराष्ट्र)

संपादक

डॉ. अशोक गायकवाड

सह आचार्य, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र,

न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एण्ड साइंस कॉलेज,

अहमदनगर (महाराष्ट्र)

सदस्य, संपादक मंडल

1. प्राचार्य डॉ. अब्दुल वहाब शेख (कोपरगाँव)
2. डॉ. भरत शेणकर (राजूर)
3. डॉ. दत्तात्रय टिळेकर (ओतूर)
4. डॉ. संजय महेर (भेंडा)
5. डॉ. अमानुल्ला शेख (नेवासा)
6. डॉ. अनिता वेताळ-अंत्रे (राहुरी)
7. डॉ. शरद कोलते (भेंडा)
8. डॉ. ऐनूर इनामदार-शेख (पुणे)
9. डॉ. शोभा राणे (नासिक)
10. डॉ. मोहम्मद शाकिर शेख (पुणे)
11. डॉ. एफ. मस्तान शहा (गोंदिया)
12. डॉ. बाळासाहेब बाचकर (बेलापुर)
13. डॉ. कामिनी बल्लाळ (औरंगाबाद)
14. डॉ. मुक्ता लांडे (अहमदनगर)
15. डॉ. सुनीता यादव (औरंगाबाद)
16. डॉ. अब्दुल समद शेख (औरंगाबाद)

शैलजा प्रकाशन

ISBN : 978-93-80788-91-3

पुस्तक	:	हिंदी और देवनागरी लिपि (प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख गौरव ग्रंथ)
अध्यक्ष	:	प्राचार्य डॉ. भास्कर झावरे
प्रधान संपादक	:	डॉ. हनुमंत जगताप
संपादक	:	डॉ. अशोक गायकवाड
प्रकाशक	:	**शैलजा प्रकाशन** 57पी, कुंज विहार–II, यशोदा नगर, कानपुर–208011 (उ.प्र.) मो. 8765061708, 9451022125 Email : shailjaprakashan@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम, 2020
मूल्य	:	1095.00 (एक हजार पंचानबे रुपये मात्र)
मुख्यपृष्ठ	:	गौरव शुक्ला
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

14. हिन्दी भाषा के विकास में मीडिया का योगदान 76
डॉ. माया प्रकाश पाण्डेय
15. त्रिपुरा में हिंदी की दशा एवं दिशा 82
डॉ. मिलन रानी जमातिया

(आ) देवनागरी लिपि
16. राष्ट्रलिपि : नागरी लिपि 89
डॉ. हरिसिंह पाल
17. सोशल मीडिया और देवनागरी लिपि 96
डॉ. गोविंद बुरसे
18. संपर्क लिपि के रूप में देवनागरी 100
डॉ. इसपाक अली
19. देवनागरी : एक आदर्श लिपि 104
डॉ. हनुमंत दशरथ जगताप
20. जोड लिपि के रूप में नागरी की भूमिका 108
उमाकांत खुबालकर
21. दुनिया की भाषाओं के लिए बेहतर विकल्प है : देवनागरी 111
डॉ. लता अग्रवाल
22. लिपि की अपसंस्कृति 116
डॉ. साकेत सहाय
23. सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि 120
डॉ. श्वेता बा. चौधारे
24. लिपि का उद्भव और विकास 124
डॉ. ऐनूर शेख – इनामदार
25. नागरी लिपि : उद्भव और विकास 128
डॉ. सुरैय्या इसुफअली शेख
26. ब्राह्मी लिपि से देवनागरी का क्रमिक विकास 131
डॉ. कामिनी अशोक बल्लाळ
27. पूर्वोत्तर–बोलियों की लिपि के संदर्भ में देवनागरी लिपि : उचित विकल्प 136
डॉ. मोहसीन खान
28. देवनागरी लिपि का विकास 147
डॉ. अरुणा हिरेमठ
29. हिंदी और देवनागिरी लिपि 151
अश्विनी सहदेवराव करपे

23

सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि

डॉ. श्वेता बा. चौधारे (सोनई, महाराष्ट्र)

आधुनिक संसाधनों में जीने वाला मनुष्य विज्ञान का सहारा लेकर कितनी ही नई खोज क्यों न कर ले भाषा के अतिरिक्त उसके पास अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम संभवतः ही कोई ओर हो सकता है। भाषा विचारों के आदान–प्रदान एवं समूह से संपर्क स्थापित करने का माध्यम है। आधुनिक वैश्वीकरण और बाजारवाद के युग में सूचना प्रौद्योगिकी के जाल ने संपर्क वा संप्रेषण का स्थान ले लिया है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई क्रांति ने ई–माध्यमों ने 'वसुधैवकुटुंबकम्' की धारणा में प्राण फँक दिए। साथ ही ज्ञान का अमूल्य भंडार सबके लिए खुल गया। आज इंटरनेट के द्वारा ई–कॉमर्स, ई–प्रशासन, ई–बैंकिग, ई–एज्यूकेशन की बाढ़–सी आ गई है, जो संभव हुआ केवल सूचना प्रौद्योगिकी के कारण। भारत में इसका विकास तेजी से हो रहा है। पूरी दुनिया ही इलैक्ट्रॉनिक और डिजिटल की बन गई है।

सूचना से संबंद्ध सूचना प्रौद्योगिकी को की मैकमिलन डिक्शनरी ऑफ इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी में कुछ ऐसी परिभाषा मिलती है– कम्प्यूटिंग और दूरसंचार के संमिश्रण पर आधारित माईक्रो –इलेक्ट्निक्स द्वारा मौखिक, चित्रात्मक, मूलपाठ विषयक और संख्या संबंधी सूचना का अर्जन, संसाधन, भंडारण और प्रसार है। तो अमेरिका रिपोर्ट के अनुसार सूचना का एकत्रिकरण, भंडारण, प्रोसेसिंग, प्रसार और प्रयोग ही सूचना प्रौद्योगिकी है। संक्षेप में कह सकते है कि यह तकनीकी शब्दावली से युक्त यह ऐसी संकल्पना है जिसमें सूचना के संजाल का नित नूतन तकनीक के माध्यम से विकास को दर्शाया जाता है। जहां हम इसे लिपि के साथ जोडते है, वहां इससे तात्पर्य है भाषाई संरचनाओं का तकनीकीकरण।

भाषा की ताकद उसकी अभिव्यक्ति क्षमता पर निर्धारित होती है तथा संकल्पना और विचारों का आदान–प्रदान उसे ओर अधिक प्रगल्भ बनाता है। जिसे सुरक्षित रखने का काम लिपि करती है। सभ्यता के विकास और मानवी आवागमन के कारण भाषा और लिपियां एक दूसरे से हमेशा प्रभावित होती रही है। महर्षि पाणिनी जैसे मनीषियों ने ध्वनि एवं लेखन में ऐक्य पर बल देते हुए ध्वनियों का स्वर और व्यंजन में वर्गीकरण किया। उच्चारण स्थान और विधि के

आधार पर लिपि संरचना सारणी बनाई। लिपि के लिए व्याकरण भी दिया। अन्य लिपियों की अपेक्षा इसका ध्वन्यात्मक, वैज्ञानिक आधार है, जिसका संरचना आधार पाणिनी सारणी है, वहीं देवनागरी लिपि है। आज कई भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी लिपि है। देवनागरी इनके लिए केवल लिखित अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि इन भाषाओं की आत्मिक अभिव्यक्ति भी नागरी लिपि से संभव हो रही है। अतः तकनीकीकरण की धारा में विकसित हो रही इन भाषाओं के साथ देवनागरी लिपि भी विकासपथ पर अग्रेसित हो रही है, इतना ही नहीं लिपि विकास हेतु अन्य लिपियों से वह स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी कर रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से लिपि विकास के चरम में समस्याओं का निराकरण कर नागरी लिपि अपना रूप निश्चित कर रही है। स्पष्ट कहा जा सकता है कि नागरी लिपि वर्तमान दौर में समस्याओं के संजाल से प्रतिस्पर्धा कर रही है। सूचना प्रौद्योगिकी का अभिन्न अंग संगणक तंत्रज्ञान से जुडा हुआ है। कम्प्यूटर को सूचना प्रौद्योगिकी का मूल वाहक कहा जा सकता है, जो सैद्धांतिक रूप से किसी विशिष्ट लिपि या भाषा से संबंधित नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी कम्प्यूटर पर आधारित सूचना प्रणाली का आधार है, जो वर्तमान में वाणिज्य व व्यापार का महत्वपूर्ण अंग बन चूका है। पर कम्प्यूटर केवल बाइनरी अर्थात 0 और 1 की द्विअंकी भाषा समझता है। किसी भी भाषा को कम्प्यूटर अपने तरीके से समझता है, अतः कम्प्यूटर का काम रोमन के साथ देवनागरी लिपि में हो सकता है, आवश्यकता है केवल वैसे प्रोगॉम की। आज संपूर्ण दुनिया में सूचनाओं का संकलन और आदान–प्रदान सुगम हो गया है। मात्र भारत में जहां हिंदी अधिकांशतः बोली और समझी जाती है, वहीं कम्प्यूटर पर अंग्रेजी के अधिक प्रयोग के कारण समस्याएं उत्पन्न हो रही है। वास्तव में यह समस्याएं तकनीकी नहीं है, केवल भाषा प्रयोग से जुडी है। बावजूद इसके अधिकांश सॉफ्टवेअर अंग्रेजी भाषा अर्थात रोमन लिपि में उत्पन्न कराए गए है। जो राष्ट्रीय भाषाओं के विकास में बाधक बन रहे है। हम देखते है जिन राष्टों ने तकनीकी एवं संबंधित सॉफ्टवेअर विकास कार्य अपनी भाषा में किए वे राष्ट्र अधिक सफल हुए है। जैसे– चीन, जापान।

आज सूचना प्रौद्योगिकी के दायरे में अधिकाधिक भारतीय भाषाओं को लाने का प्रयास हो रहा है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटिंग का विस्तार कर ज्ञान का विस्तार भी संभव हुआ है। मात्र इसका प्रयोग बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने वाणिज्यिक लाभ को सिद्ध करने में कर रही है। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी मशीनों पर आधारित है। बुद्धिपरक कामों के लिए कम्प्यूटर का विकास हुआ है। कम्प्यूटर का उद्गम व विकास उन राष्ट्रों में हुआ जहां अंग्रेजी

भाषा व रोमन लिपि थी। भारत में इस तंत्रज्ञान का आगमन भी उसी भाषा–लिपि में हुआ। जिसके कारण अन्य भारतीय भाषाओं के लिए कम्प्यूटिंग कठिन साध्य हो गया। स्पष्ट है कम्प्यूटिग का विकास यदि हमारे देश में होता तो निश्चित ही उसका विकास देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा में होता और उसका प्रयोग करनेवालों की संख्या भी अधिक होती। क्योंकि हम यह जानते है कि देवनागरी लिपि कम्प्यूटर तंत्रज्ञान के पूर्ण अनुकूल हैं। देवनागरी को कम्प्युटेशनल भाषा में बदलने की अपार संभावना है। इतना ही नहीं इस लिपि के माध्यम से भारत की नहीं विदेशी विलुप्त भाषाओं को पुनर्जीवित किया जा सकता है। क्योंकि देवनागरी में किसी भी भाषा या ध्वनि का लिप्यंकण करने की क्षमता है।

देवनागरी में जहां 52 वर्ण है, तो रोमन लिपि में 26। अतः लिपि की भ्रामकता देवनागरी में नहीं। अतः कम्प्यूटर विकास देवनागरी में भी संभव है। अनेक फांट के कारण ई–मेल, सर्चिंग में होनेवाली अडचण यूनिकोड फांट के कारण दूर हो गई है। यूनिकोड के कारण नीज भाषा में प्रोग्रॉम बनाना संभव हो पाया है। पिछले दो दशकों में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बाढ सी आ गई है। कई नए समर्थ ऑपरेटिंग सिस्टिम, विश्व भाषाई युनिकोड, ओपन टाइप फांट, ऑफिस सूट, वेब, मानव भाषा संसाधन, मशीनी अनुवाद, टेक्स टू स्पीच जैसे नए प्रोग्रॉम उपलब्ध हो रहे है। उपयोगकर्ताओं की संख्या भी बढ़ी हैं। सोशल मीडिया भी इससे अछूता नहीं रहा।

इन सबके बावजूद देवनागरी लिपि और सूचना प्रौद्योगिकी के जुडे कई सवाल समस्या के रूप में सामने आते है। नागरी लिपि के विकास की प्रथम समस्या के अनुसार रोमन लिपि से होनेवाली तुलना के चलते पहला प्रश्न वर्णमाला की अधिकता है। दूसरी समस्या अन्य भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में विश्वसनीयता की है, जहां लोक–बोलियों एवं भाषाओं के साथ क्षेत्रीय भाग में अनुप्रयुक्त दूसरी एवं उससे संबंधित बोलियों एवं उन बोली–भाषाओं की लिपियों की विश्वसनीयता में नागरी लिपि के विकास का मापदंड सुनिश्चित नहीं हो रहा है। जिसके कारण यह बोलीभाषाएं अपने–आप को असुरक्षित महसूस कर रही है।

देवनागरी लिपि के तकनीकी विकास से जुडी अन्य समस्या है उसके अंतर्राष्टीय मानदंडों को लेकर। हिंदी भाषा जहां प्रयुक्त हे, ऐसे नेपाल, मारीशस, सूरीनाम तथा भारत में नागरी लिपि के विकास में मतभेद पाया जाता है। अंतर्राष्टीय स्तर पर रोमन लिपि की तुलना में नागरी लिपि का प्रयोग कम ही देखा जाता है। विशेष अंतर्राष्टीय प्रयास न होने के कारण देवनागरी लिपि द्वारा प्रयुक्त किसी भाषा को अब तक संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा के रूप में अनुसूची में स्थान नहीं मिल पाया है।

क्षेत्रीय बोलियों के अधिग्रहण में देवनागरी लिपि स्वयं को अक्षम पा रही है, जो लिपि विकास की प्रक्रिया का अवरोध है। भारतीय युवा पीढी में भी देवनागरी लिपि के तकनीकी विकास के प्रति उदासी देखी जाती है। युवा वर्ग नागरी लिपि की तुलना में रोमन लिपि में अपने करियर की अधिक संभावना को समझता है। नागरी लिपि को लेकर व्युत्पन्न वैचारिक मतभेद, सामाजिक अविश्वसनीयता और शैक्षिक संस्थानों में उदासीनता देवनागरी के तकनीकी विकास में बाधक सिद्ध हो रही है। फिर भी सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी में सबल बनाने वाले कुछ मुद्दों की ओर भी ध्यान देना होंगा। जिनमें से पहला है –फॉन्ट। आज इंटरनेट से कई फांट मुफ्त में डाउनलोड किए जा सकते है। भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने हिंदी में सी.डी. में मुफ्त प्रयोग के लिए कई फांट दिए हैं। मात्र उनके व्यावसायिक प्रयोग पर रोक लगाई है। फांट को आपस में बदलने के लिए और इसे युनिकोड में परिवर्तित करने के लिए फांट कन्वर्जन यूटिलिटी प्रोगॉम बनाए है, जो व्यावसायिक प्रयोग के लिए मुफ्त है। देवनागरी के अक्षर युनिकोड में परिवर्तित किए गए हैं और सूचना विनिमय के मानक के रूप में यूनिकोड संपूर्ण विश्व में स्वीकारा जा रहा है। देवनागरी की बाधाओं से अधिक उसके वैज्ञानिकता का प्रसार अधिक आवश्यक है। सुविधाजन्य वर्ण विभाजन, उच्चारण–लिखावट में एकरूपता एवं निश्चितता, लिपि में स्पष्टता के कारण यह एक वैज्ञानिक लिपि है।

देवनागरी लिपि के मानकीकरण की प्रक्रिया निरंतर जारी है। युवाओं का देवनागरी लिपि के प्रति विश्वास ही नागरी लिपि के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों की सार्थकता का दर्शक होगी। देवनागरी लिपि को सूचना प्रौद्योगिकी में स्थापित करने के लिए भारत सरकार ने देवनागरी लिपि को तकनीकी रूप में विश्वस्तरीय बनाया है।

सारांश

सूचना प्रौद्योगिकी ने एक वैश्विक अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है। जो लगभग मानवी जीवन के सभी अंगों को प्रभावित कर रहा है। जहां तक देवनागरी लिपि का संबंध है, आज संस्कृत, पालि, हिंदी, मराठी, कोंकणी, सिंधी, कश्मीरी, नेपाली, गढवाली, बोडो, मगही, भोजपुरी, मैथिली, संथाली जैसी भाषाएं भी देवनागरी में लिखी जा रही है। इसके अलावा गुजराती, पंजाबी, विष्णुपुरिया, मणिपुरी, उर्दू भाषा की अभिव्यक्ति भी देवनागरी लिपि में हो रही है। इन सभी देशी भाषाओं और कई विदेशी भाषाओं को आधुनिकता से जोड कर विश्व के कोने–कोने तक फैलाने का श्रेय देवनागरी लिपि को ही जाएगा।

संपर्क सूत्र :
हिंदी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई
तहसील– नेवासा, जि. अहमदनगर 414105 (महाराष्ट्र)
choudhares@gmail.com